साम्प्रदायिक हिंसा की राजनीति के ख़तरे

—स्वामी अग्निवेश

देश के कई हिस्सों में कट्टरपंथी मुस्लिम युवकों द्वारा उग्र हिंसात्मक प्रदर्शन सर्वथा निन्दनीय हैं। ये प्रदर्शन कथित रूप से किसी गैर जिम्मेदार हिन्दू नेता कमलेश तिवारी द्वारा हज़रत मोहम्मद के विरूद्ध की गई अभद्र अपमानजनक टिप्पणी को लेकर हो रहे हैं। आरोपी कमलेश तिवारी रासुका में गिरफ्तार होकर पिछले महीने से ही जेल में हैं और हिन्दू महासभा, आर.एस.एस. समेत अन्य सभी संगठनों ने उसके इस बयान की भर्त्सना की है। ऐसी स्थिति में मुस्लिम युवकों का उग्रतर होते जाना, लखनऊ तथा उत्तर प्रदेश के कई शहरों में तथा पश्चिम बंगाल के माल्दा जिले के कालियाचक में वाहनों को आग लगाना और पुलिस थानों पर हमला करना बहुत निन्दनीय है। अनेक प्रतिष्ठित मुस्लिम संगठनों ने इन उग्र प्रदर्शनों की सख्त आलोचना की है हालांकि मुख्य धारा के समाचार पत्रों ने उन बयानों को समुचित स्थान नहीं दिया।

इस सबके बीच क्या हम सबको स्वयं पैगम्बर साहब के जीवन से प्रेरणा नहीं लेनी चाहिये? मक्का की जिस गली से वे रोज़ गुज़रते थे वहाँ एक यहूदन बुढ़िया जो उनसे नफरत करती थी—उन पर कूड़ा—कचरा फेंक देती थी। हज़रत मोहम्मद अपने ऊपर पड़े कचरे को झाड़कर मुस्कराते हुए आगे बढ़ जाते थे। एक दिन जब ऊपर से कचरा नहीं गिरा तो रसूल ने कारण का पता किया। पता चला कि बुढ़िया बीमार है। तत्काल मोहम्मद साहब उसका हालचाल पूछने चले गये और उनकी इस दयालुता से बुढ़िया शर्मसार हो गई।

इस्लाम के पैगम्बर के जीवन की इस सच्ची कहानी को मुझे आर्यसमाज के प्रकाण्ड वैदिक विद्वान स्वामी समर्पणानन्द (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) जी ने आज से 50 वर्ष पहले सुनाया था और मैं इस प्रेरक प्रसंग से बहुत प्रभावित रहा हूँ। अनेक राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय मंचों से इस प्रसंग की अपने भाषणों में ज़िक्र कर मैंने सभी से, विशेषकर मुस्लिम युवकों को आगाह किया है कि वे उग्र हिंसात्मक प्रदर्शन कर जहाँ एक ओर अपनी तौहीन करवाते हैं, वहीं रसूल के बारे में अपनी अंधभक्ति दिखाकर अच्छा उदाहरण पेश नहीं कर रहें हैं। जब डेनमार्क के अखबारों में हज़रत मोहम्मद के कार्टून छपे थे तब यह बात मैंने तत्कालीन ईरान सरकार द्वारा इस्फहान शहर में आहूत एक महती धर्माचार्यों की सभा में की थी। उसके बाद सउदी अरब के मुस्लिम वर्ल्ड लीग द्वारा ऐसी ही सभा जिनेवा में हुई थी वहां भी यह बात कही थी। चार्ली हेब्दो काण्ड के बाद उसी पेरिस में आयोजित धर्माचार्यों एवं मीडिया कर्मियों की एक संयुक्त सभा में मैंने यही बात दुहराई थी। अभी हाल में 16 मई, 2015 दिल्ली के रामलीला मैदान में जमीयत उलेमा ए हिन्द द्वारा आयोजित लगभग 50,000 की जनता को संबोधित करते हुए मैंने यहाँ तक कहा कि पैगम्बर का अपमान करने की कोशिश करने वालों को पैगम्बर के ही जीवन से प्रेरणा लेकर फलों का टोकरा भेंट करना चाहिये। मेरा रामलीला मैदान का भाषण यूट्यूब पर भी देखा व सुना जा सकता है।

माल्दा के कलियाचक घटना की जांच के लिए गये बी.जे.पी. के सांसद श्री एस.एस. आहलूवालिया की टीम को और सी. पी.एम. के सांसद मोहम्मद सलीम को रोककर ममता बनर्जी की सरकार ने अपना साम्प्रदायिक चेहरा बेनकाब कर लिया है। तृणमूल कांग्रेस सरकार का यह गैर प्रजातांत्रिक रवैया भी निन्दनीय है।

सुश्री ममता बनर्जी ने पहले भी भारत के गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह को भी रोकने की धृष्टता कर चुकी हैं। पाकिस्तान के गुलाम अली की गज़ल गायिकी आयोजन कर ममता जी माल्दा काण्ड में किये अपनी गलती को ढांप नहीं पायेंगी।

बढ़ती असहिष्णुता के विरुद्ध आवाज उठाने वालों को मुस्लिम उग्र पंथियों की मुखर आलोचना में शीघ्र सामने आना चाहिये। ऐसे वक्त में चुप रह जाना परोक्ष रूप से उनका समर्थन माना जा सकता है। कतिपय असामाजिक शक्तियों द्वारा परिस्थिति को अपने हिन्दुत्व उग्रवाद को चमकाने के लिए किया जाना भी सांप्रदायिक हिंसा की दिशा में देश को ढ़केलने में मददगार हो सकता हैं।

E-mail. agnivesh70@gmail.com
दूरभाष : 011.23367943
दिनांक : 13 जनवरी, 2016